वाल्मीकि महान् रे

पं. नवीन जोशी
जयपुर

राम नाम न छूटे कभी भी रखो तुम ध्यान रे।
शरद पूर्णिमा को हुए वाल्मीकि कवि महान रे।
मानवता की अद्वितिय, अद्‌भुत छवि हुए हैं ये,
करुणरसी विश्व के प्रथम कवि भी हुए हैं ये।
काव्य में चमक ज्यों निकले तलवार म्यान से,
रचना शक्ति से भर दिया संसार को ज्ञान से।
आज तभी भारत की विश्व में बनी पहचान रे।

शरद पूर्णिमा को हुए वाल्मीकि कवि महान रे।
काली मानवता की नियंत्रित की सृष्टि आपने,
अनेक रचनाकरों को दी लेखन दृष्टि आपने।
फिर कहता कोई राम-नाम तो स्वयं काव्य है,
कोई भी कवि बन जाए सहज ही संभाव्य है।
रामायण लगे है जैसे कोई मणियों की खान रे।

शरद पूर्णिमा को हुए वाल्मीकि कवि महान रे।
हाथों में कलम रहने दो मत थमाओ चाकू इन्हें,
ऋषियों के अंग हैं यह मत बुलाओ डाकू इन्हें।
चलो कुछ ऐसे मनाए वाल्मीकि अवतरण को,
'प्राण जाए पर वचन न जाए' निभाएं प्रण को।
इन्हें मंदिर-मस्जिद पर मत करो लहूलुहान रे।
शरद पूर्णिमा को हुए वाल्मीकि कवि महान रे।